इकाई 17 भारत में अनौद्योगीकरण

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विवेच्यकाल में हुए अनौद्योगीकरण का तात्पर्य समझा सकेंगे,
- भारतीय उद्योगों पर यूरोपीय व्यापार के प्रभाव पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों और अनौद्योगीकरण के बीच संबंध स्थापित कर सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

18वीं शताब्दी के मध्य से भारत के राजनीतिक और आर्थिक मामलों में ब्रिटिश सत्ता के हस्तक्षेप से भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारत पर ब्रिटेन के आर्थिक नियंत्रण का सबसे पहला परिणाम यह हुआ कि परंपरागत भारतीय हस्त उद्योग समाप्त होते चले गये। भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास में इस प्रक्रिया को भारतीय अर्थव्यवस्था के "अनौद्योगीकरण" के रूप में जाना जाता है।

17.2 आनौद्योगीकरण का अर्थ

लगातार हो रहे औद्योगिक पतन की प्रक्रिया को आनौद्योगीकरण कहा जाता है। औद्योगिक उत्थान या पतन की पहचान दो तथ्यों से होती है। पहला यह कि राष्ट्रीय आय में उद्योग का कितना हिस्सा है और दूसरा यह कि कितने प्रतिशत लोग इस पर आश्रित हैं। इनकी बढ़त से औद्योगीकरण का और पतन से अनौद्योगीकरण का संकेत मिलता है।
औपनिवेशिक भारत और ब्रिटेन में रहने वाले विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक हितों से जुड़े समुदायों का ध्यान भारतीय उद्योगों के नाश और देश के ग्रामीणीकरण के प्रश्न पर केंद्रित हुआ। भारतीय राष्ट्रवादियों ने कहा कि ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारत का शोषण हो रहा है और इसके प्रमाण स्वरूप उन्होंने भारतीय हस्त उद्योगों के विनाश का तथ्य लोगों के सामने रखा। ब्रिटेन के उदीयमान मुक्त व्यापारी समुदाय ने भारत के व्यापार पर ईस्ट इंडिया कंपनी से एकाधिकार पर प्रहार करने के क्रम में यह बात कही कि कंपनी शासन देश के परंपरागत हस्त उद्योग का विनाश कर रहा है।

17.3 ब्रिटिश पूर्व अर्थव्यवस्था

कुछ विद्वान ब्रिटिश पूर्व भारतीय औद्योगिक ढाँचे को समृद्ध और संभावना से परिपूर्ण मानते हैं, जबकि कुछ विद्वानों का मानना है कि भारतीय उद्योग अवरुद्ध हो चुका था और तकनीकी रूप से पिछड़ा हुआ था, औद्योगिक बदलाव संबंधी आंकड़े, मसलन उत्पादन कितना होता था, उत्पादकता कितनी थी, पूंजी निवेश कितना था और कितने लोग इससे जुड़े हुए थे, सही सही रूप में उपलब्ध नहीं हैं। अतः उपनिवेश बनने से पूर्व भारत की औद्योगिक क्षमता का सटीक विवरण उपलब्ध नहीं है। पर जहाँ तक उत्पादों के गुण का सवाल है, इसकी सही तस्वीर हमारे सामने हैं। इस काल में होने वाले उत्पादों की गुणवत्ता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकता है।

यही सही है कि मुगलकालीन भारत में आय के विभाजन में काफी असमानता थी, पर इसके बावजूद घरेलू बाजार में अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं की भरपूर माँग थी और इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही होती गयी। उच्च कोटि की विलास की वस्तुओं का खरीददार अमीर राजन्य वर्ग था।

भारत में कपड़ा उद्योग सबसे ज्यादा फैला हुआ था और यह भारत का सर्वप्रमुख उत्पाद था। रंगाई के काम में आने वाली वस्तुएँ (इसमें नील प्रमुख था) और चीनी भी प्रमुख औद्योगिक उत्पाद थे। कृषि आधारित अन्य उद्योगों में तेल, तंबाकू, अफीम और नशीले पेय पदार्थों का स्थान प्रमुख था। खनन उद्योग अविकसित था, पर भारत लोहे के उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर था। जहाजरानी एक अन्य महत्वपूर्ण और विकासशील उद्योग था।

उद्योग-पूर्व यूरोप के समान मुगलकालीन भारत में ऐसा कोई विभाजन नहीं था कि शहरों में उद्योग स्थापित होंगे और गाँव कच्चे माल की आपूर्ति करने के केंद्र होंगे। भारत में उद्योग गाँवों में ही केंद्रित थे।

मुगलकालीन अर्थव्यवस्था में चीजों की माँग और संगठनात्मक विकास बहुत धीरे धीरे हुआ। माँग की अपेक्षाकृत अवरुद्धता, पूँजी निर्माण की धीमी गति और तकनीकी खोजों के अभाव के कारण समग्र रूप से मुगल औद्योगिक अर्थव्यवस्था का विकास धीमी गति से हुआ।

17.3.1 यूरोप के साथ आरंभिक व्यापार का स्वरूप

आरंभ में यूरोप के साथ होने वाले व्यापार में भुगतान संतुलन भारत के पक्ष में था। 17वीं शताब्दी के दौरान एशिया से यूरोप को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में काली मिर्च और अन्य मसालों का स्थान भारतीय कपड़े ने ले लिया। 1664 तक, इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत से 750,000 थान कपड़े आयातित किए थे, यह कंपनी के कुल व्यापार का 73 प्रतिशत हिस्सा था। आने वाले दो दशकों में यह मात्रा बढ़कर 1.5 लाख थान तक पहुँच गयी, जो कंपनी के कुल आयातित मूल्य का 83 प्रतिशत था। (केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, वाल्युम 1)।

भारतीय कपड़े के निर्यात में बढ़ोत्तरी होने से कपड़ा उद्योग का तेजी से विकास हुआ जिसके कारण संभवतः काफी लोगों को रोजगार मिला होगा।

भारतीय कपड़े के निर्यात में अपूर्व वृद्धि होने से खरीददार देशों से काफी मात्रा में सोना-चाँदी भारत आने लगा, क्योंकि व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था। ऐसा माना जाता है कि अगर इसी समय अमेरिकी खानों की खोज न हुई होती, तो इस काल का भारत-यूरोपी व्यापार तीन शताब्दियों तक कायम न रह पाता, यह व्यापार निश्चित रूप से भारत के पक्ष में था। व्यापार संतुलन यूरोपीय देशों के हक में नहीं था, अतः परिणामस्वरूप यूरोप की जमा पूँजी तेजी से सामाप्त होने लगी।

व्यापारिक विचारधारा के समर्थक पश्चिमी विचारक पश्चिमी देशों की राष्ट्रीय आर्थिक अस्थिरता के लिए निषेधात्मक व्यापार संतुलन (निर्यात से अधिक आयात) को उत्तरदायी मानते थे। उन्होंने यूरोपीय कंपनियों की यह कहकर आलोचना की कि इनके मार्फत यूरोप का सारा धन एशिया चला जा रहा है। 19वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में भारत के साथ होने वाला यूरोपीय व्यापार दलाली किस्म का व्यापार था, जिसमें यूरोपीय कंपनियाँ कम

दाम में वस्तुएँ एशिया से खरीदती थीं और ऊँचे मूल्यों में एशिया, अफ्रीका और दूसरे देशों में बेचती थीं। यूरोपीय व्यापारी कम दाम में वस्तुएँ खरीदकर और अधिक दाम में बेचकर मुनाफा कमाते थे। भारत से व्यापार करने में यूरोपीय कंपनियों की सबसे बड़ी समस्या वित्त संबंधी थी। भारत में ब्रिटिश या यूरोपीय चीजों की माँग न होने के कारण भारतीय चीजों को खरीदने के लिए सोने और चाँदी (बुलियन) का उपयोग करना पड़ता था। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होने वाले भारत के व्यापार में हालांकि यूरोपीय देशों से बुलियन तेजी से निर्यात होने लगा पर भारत के विदेशी व्यापार और उद्योग पर इसका महत्वपूर्ण असर पड़ा।

17.3.2 यूरोप के साथ आरंभिक व्यापार के परिणाम

इस काल में बंगाल एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा। यूरोपीय व्यापार के कारण देशी व्यापार उन्नत हुआ।

चीजों की बढ़ती हुई माँग के कारण स्थानीय भारतीय उत्पादक उद्योग तेजी से विकसित हुए। इसके बावजूद यूरोपीय व्यापारियों ने नये व्यापारिक और औद्योगिक संगठनों की स्थापना को बढ़ावा नहीं दिया। उन्होंने अपने को परंपरागत व्यापारिक और औद्योगिक उत्पादक संगठनों से ही जोड़े रखा।

19वीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटेन और बाहर के अन्य देशों को होने वाले भारतीय उत्पादक वस्तुओं के निर्यात का प्रसार रुक गया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत की उत्पाद वस्तुओं का बाजार विदेशों में कम होने लगा।

भारत से होने वाले निर्यात के स्वरूप में भी भारी परिवर्तन हुआ। तैयार माल का निर्यात कम हुआ और कच्चे माल के निर्यात में वृद्धि हुई। नीचे दी गयी तालिका से यह बात और भी स्पष्ट हो जाएगी :

तालिका 1 : वस्तुओं का निर्यात और भारतीय निर्यात के कुल मूल्य का प्रतिशत 1811 से 1850 तक
(स्रोत : कैंब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया, पृ. 842)

	नील	फुटकर सामान	कच्चा रेशम	कच्चा सूत	अफीम	चीनी
1811-12	18.5	33.0	8.3	4.9	23.8	1.5
1814-15	20.0	14.3	13.3	8.0	उपलब्ध नहीं	3.0
1828-29	27.0	11.0	10.0	15.0	17.0	4.0
1834-35	15.0	7.0	8.0	21.0	25.0	2.0
1839-40	26.0	5.0	7.0	20.0	10.0	7.0
1850-51	10.9	3.7	3.8	19.1	30.1	10.0

17.3.3 प्लासी के युद्ध के बाद व्यापार

1757 के पहले ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से निर्यातित कुल 80-90 प्रतिशत वस्तुओं का भुगतान बुलियन के माध्यम से करती थी। धीरे-धीरे यह स्थिति बदलती गयी और 1795 से 1812 के बीच बंगाल से निर्यात 33 प्रतिशत वस्तुओं के बदले विदेशी सामान बंगाल में आने लगा।

प्लासी के युद्ध के बाद छह दशकों तक का काल व्यापारिक पूँजी द्वारा भारत के शोषण का काल था। इस काल में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत पर अपना नियंत्रण स्थापित किया और इस उपमहाद्वीप के साथ सभी ब्रिटिश व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।

बंगाल की दीवानी प्राप्त करने के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी पर बुलियन के निर्यात का भार कम हुआ। बंगाल की लूट-खसोट, चुंगी मुक्त अंतर्देशीय व्यापार से होने वाले मुनाफे और दीवानी से प्राप्त राजस्वों का उपयोग कंपनी के निवेश को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए नहीं किया गया। कंपनी ने प्रतियोगिता से बचने के लिए मुक्त व्यापार को हतोत्साहित किया और स्थानीय बाजार में अपने मालों की खपत बढ़ाई। इन मालों के उत्पादकों को जबरन कम दाम पर अपनी चीजों को कंपनी के हाथ बेचने के लिए मजबूर किया गया।

2 क रुई की धुनाई

2 ख बुनाई

2 ग हस्त करघा

2 घ मलमल की तैयारी

एक समकालीन विद्वान विलियम बेल्ट ने इस मुद्दे पर प्रकाश डालते हुए लिखा है : "इस विभाग में होने वाली धोखाधड़ी कल्पनातीत थी, सभी बुनकरों को ठग रहे थे, कंपनी के गुमाश्तों और उनके सहयोग से जत्थेदारों (कपड़ों की जाँचकर्ता) द्वारा चीजों का मूल्य बाजार मूल्य से 15 प्रतिशत और कहीं-कहीं 40 प्रतिशत से कम आँका गया।"

प्लासी के युद्ध और 1813 के बीच बंगाल ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन अराजकता से परिपूर्ण था। इंग्लिश कंपनी के कर्मचारी "निजी" व्यापार में लिप्त थे और अपना धन विदेशी कंपनियों और प्रछन्न अंग्रेजी व्यापार के माध्यम से यूरोप भेज रहे थे।

17.3.4 यूरोपीय व्यापार का प्रभाव

1813 के पूर्व ब्रिटिशों द्वारा भारत का किया जाने वाला शोषण व्यापारिक पूँजीवाद के तहत व्यापारिक पूँजी द्वारा किया जाने वाला शोषण था। ईस्ट इंडिया कंपनी का उद्देश्य कम से कम दामों में भारतीय वस्तुओं को खरीदकर यूरोपीय देशों और ब्रिटेन में महँगे दामों में बेचकर मुनाफा कमाना था। उन्होंने कम से कम दामों में अधिक से अधिक भारतीय वस्तुओं (खासकर कपड़ा) की खरीद का अराजकतापूर्ण जाल फैलाया। इससे भारतीय निर्यातक उद्योग, खासकर कपड़ा उद्योग पर बुरा प्रभाव पड़ा।

इस काल के घरेलू औद्योगिक उत्पादन संबंधी आँकड़े उपलब्ध नहीं है, अतः इतिहासकारों और अर्थशास्त्रियों को ब्रिटिश शोषण के परिणामों पर ज्यादा भरोसा करना पड़ता है। ब्रिटिश शोषण के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव खासकर कारीगरों और खेतिहरों पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर ही विद्वान विचार-विमर्श करते हैं।

एक तरफ इस काल में कंपनी ने देश के उद्योगों का अदूरदर्शितापूर्ण और अराजक शोषण किया, दूसरी तरफ ब्रिटेन के कपड़ा निर्माता भारतीय कपड़ों पर कड़े आयात कर लादने के लिए दबाव डालने लगे।

1720 तक आते-आते ब्रिटिश कपड़ा निर्माताओं के दबाव के कारण भारतीय रेशम और रंगीन, छपाई वाले कपड़ों पर प्रतिबंध लग गया। मलमल के कपड़ों और अन्य भारतीय सूती वस्त्रों पर कड़े कर लगाये गये। 1813 में संसद ने एक बार फिर सूती और मलमल के कपड़ों के उपभोग पर एकमुश्त कर लगाया।

इस प्रकार 1813 तक भारतीय उद्योग, खासकर कपड़ा उद्योग पर दो तरफा मार पड़ी। एक तरफ कंपनी ने भारत में कपड़ा उत्पादकों से कम दाम पर खरीद करनी शुरू की और उन्हें अग्रिम राशि लेने को मजबूर किया गया। इस प्रकार गरीब बुनकर अब मजदूर मात्र रह गये। 1789 के एक नियम के तहत सामान में त्रुटि रहने पर अग्रिम राशि का 35 प्रतिशत जुर्माने के रूप में वसूल लिया जाता था। कंपनी के कर्मचारियों ने व्यापार के नाम पर लूट मचा दी, कंपनी ने अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की अदूरदर्शितापूर्ण नीति अपनाई। इसका समग्र रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था और खासकर कपड़ा उद्योग पर निषेधात्मक प्रभाव पड़ा।

दूसरी तरफ, अपने घर में ईस्ट इंडिया कंपनी का तीव्र विरोध हुआ। भारत के साथ होने वाले व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार इसका सर्वप्रमुख कारण था। इसके अतिरिक्त उन व्यापारियों ने भी कंपनी की आलोचना की जो घरेलू उत्पादन में लगे हुए थे। कंपनी द्वारा आयातित भारतीय माल से उनके उद्योग का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था।

कंपनी की अपनी अदूरदर्शितापूर्ण शोषणात्मक नीति और मुक्त व्यापार करने के इच्छुक व्यापारियों के भारतीय उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लगाए गए और और इसके कारण भारतीय कपड़ा उद्योग में कंपनी का निवेश लगातार कम होता गया। 1705 में यह 92,68,770 रुपये का था, जो 1799 में घटकर 90,51,324 रुपये रह गया और 1810 तक घटकर 25,50,000 रुपये रह गया। कंपनी के खाते में बंगाल से होने वाले कपड़े के निर्यात का मूल्य 1792 में 61,67,851 रुपये था जो 1823 में घटकर 3,42,843 रुपये हो गया। 19वीं शताब्दी के आरंभ में जहाँ तैयार माल के निर्यात में कमी आई और कच्चे माल का निर्यात बढ़ा वहीं भारत में तैयार माल के आयात में वृद्धि हुई। दिखाए गए मूल्य मिलियन (10 लाख रुपए) के रूप में प्रदर्शित किए गए हैं। भारतीय विदेशी व्यापार के स्वरूप का यह परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप भारतीय उद्योग का विनाश अनौद्योगीकरण कहलाया। समकालीन विद्वानों और बाद के इतिहासकारों ने भी इस स्थिति को अनौद्योगीकरण के रूप में परिभाषित किया।

तालिका 2 : भारत में आयातित वस्तुएँ 1828-1840

	कपास सूत मूल्य	(%)	तैयार कपड़ा	(%)	धातु मूल्य	(%)	शराब मूल्य	(%)	ऊनी सामान मूल्य	(%)
1828-29	4.2	7.8	11.8	22.0	8.6	16.0	4.6	8.6	2.6	4.9
1831-32	5.1	11.1	9.6	21.4	8.6	19.1	2.5	5.5	2.1	4.6
1834-35	4.1	9.7	8.1	21.0	6.0	14.0	3.4	8.0	2.2	5.2
1837-38	6.2	12.8	13.6	28.0	5.1	10.6	2.6	5.3	1.4	2.9
1849-50	7.5	13.3	18.3	32.3	6.1	11.0	3.1	5.5	1.2	2.1

बोध प्रश्न 1

सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए।

1) अनौद्योगीकरण का मतलब है :
   - क) उद्योग में कंप्यूटर का उपयोग
   - ख) देश में उद्योग का अभाव
   - ग) देश में कृषि का अभाव
   - घ) राष्ट्रीय आय में उद्योग का कम होता हिस्सा और इस पर आश्रित जनसंख्या का कम होता प्रतिशत।

2) आरंभिक यूरोपीय व्यापार के दौरान अमेरिकी खानों की खोज होने से :
   - क) भारत से व्यापार करने के लिए यूरोपीय व्यापारियों को वित्तीय राहत मिली।
   - ख) भारत के साथ यूरोप का व्यापार बंद करने में यूरोपवासियों को कामयाबी मिली।
   - ग) कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
   - घ) (8)और (ग) दोनों सही हैं।

3) 1820 के दशक तक :
   - क) भारत से होने वाले यूरोपीय व्यापार का स्वरूप बदल गया।
   - ख) भारत के साथ होने वाले यूरोपीय व्यापार के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
   - ग) ब्रिटेन को होने वाले निर्यात में तैयार माल का हिस्सा कम हुआ।
   - घ) क) और ग) दोनों सही हैं।

17.4 अनौद्योगीकरण

आरंभिक राष्ट्रवादी अर्थशास्त्री आर.सी. दत्त और बाद में मदनमोहन मालवीय (भारतीय औद्योगिक आयोग की बैठक में प्रकट किया गया विरोध मत) ने यह तथ्य सामने रखा कि भारत का अनौद्योगीकरण हो गया है, उन्होंने प्रमाण स्वरूप उत्पादक वस्तुओं, खासकर मैंचेस्टर में तैयार वस्तुओं के निर्यात के आँकड़े प्रस्तुत किए। उदाहरणस्वरूप दत्त ने यह तथ्य सामने रखा कि इंग्लैंड और केप ऑफ गुड होप के पूर्व में स्थित इसके बंदरगाहों से भारत में 1794 में £ 156 मूल्य के कपड़े भेजे गये थे, जो 1813 में बढ़कर 108824 हो गये।

1813 के पहले ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने एकाधिकार व्यापार के जरिए भारतीय औद्योगिक क्षेत्र, खासकर कपड़ा उद्योग का जम कर शोषण किया, जिससे उद्योग का पतन शुरू हो गया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए भारत से जबरदस्ती कम मूल्य पर चीजें खरीदी और यूरोप में अधिक मूल्य पर उसे भेजा।

इंग्लैंड में भारतीय कपड़े के निर्यात पर प्रतिबंध लगने से उद्योग को एक और झटका लगा।

बनकरों और सूत कातने वालों की आय तेजी से घटी। इसके परिणामस्वरूप इस परंपरागत औद्योगिक क्षेत्र में न तो पूँजी इकट्ठी हो सकी और न ही कोई तकनीकी विकास हो सका।

एक तरफ भारत का परंपरागत औद्योगिक क्षेत्र नष्ट किया जा रहा था, दूसरी तरफ इसी काल में ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति शुरू हुई। इसमें नयी तकनीकों का आविष्कार हुआ और साथ ही साथ पूँजीवादी उत्पादन के सिद्धांत के तहत नये संगठन सामने आये।

3. काम करते हुए लोहार

4. कागज के बनाने की तैयारी

विकसित होते हुए ब्रिटिश कपड़ा उद्योग को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त थे, जबकि इसी काल के भारतीय कपड़ा उद्योग को उन लाभों से वंचित रखा गया। ब्रिटिश उद्योग के पास एक लगातार विकसित तकनीकी आधार था, इसकी अर्थव्यवस्था भी उद्योग के विकास के अनुकूल थी और सबसे बड़ी बात यह थी कि इसे विदेशी प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ा। बल्कि यह कहना उचित होगा क इसे विदेशी प्रतियोगिता से बचाए रखा गया। कुछ इतिहासकारों का यह मानना है कि ब्रिटिश मशीन से बने धागे और कपड़े के निर्यात से भारत के घरेलू कपड़ा उद्योग को कोई धक्का नहीं लगा क्योंकि ब्रिटिश शासन के अंतर्गत राजनीतिक स्थायित्व, बेहतर यातायात व्यवस्था और बाजार के विकास के कारण कृषि क्षेत्र में, प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त यह भी तर्क दिया गया कि मशीन से बने सस्ते धागों के कारण घरेलू हथकरघा उद्योग मजबूत हुआ। दूसरे क्षेत्र में जो गिरावट आई, उसकी भरपाई प्रतिव्यक्ति आय बढ़ने और अन्य आर्थिक गतिविधियों से हो गई। लेकिन इन तत्वों के लिए कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि 19वीं सदी के दौरान कपड़ों की माँग में वृद्धि हुई या प्रति व्यक्ति

वास्तविक आय में कोई बढ़ोतरी हुई। इसके अलावा इतिहासकार बिपिन चंद्र का मानना है कि सूत की तुलना में कपड़े के दाम तेजी से गिरे। इस कारण से भारतीय बुनकरों को कोई फायदा नहीं हुआ। सबसे बड़ी बात है कि ऐतिहासिक तथ्य इन तर्कों की पुष्टि नहीं करते हैं। 19वीं शताब्दी में कपड़े की माँग में या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त सूत की अपेक्षा कपड़े की कीमत ज्यादा तेज़ी से गिरी।

17.5 कुछ निष्कर्ष

ऊपर कुछ स्थानीय और क्षेत्रीय अध्ययनों का हवाला दिया गया। इसे उपनिवेशवादी शोषण के संदर्भ में रखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि भारत में ब्रिटिश शासन की प्रथम शताब्दी के अंतर्गत भारतीय उद्योग का निश्चित रूप से पतन हुआ।

ब्रिटेन ने जानबूझकर भारत को एक उत्पादक देश से कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित किया। यह बात 1840 में सलेक्ट कमेटी के समक्ष रखी गयी ईस्ट इंडिया कंपनी की याचिका से पुष्ट होती है—"इस कंपनी ने अपने प्रयत्नों से और उत्पादक प्रवीणता और दक्षता के बल पर भारत को उत्पादक देश से कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित करने में सफलता पाई ... कंपनी ने इस देश और भारत के बीच एक खास तरह का संबंध स्थापित किया है और घरेलू मामलों के लिए भारत से 30 लाख रुपये लाये गये हैं ... भारतीय उद्योग का स्वरूप बिल्कुल बदल दिया गया है और इसके परिणामस्वरूप भारत उत्पादन के निर्यातक से बदलकर कच्चे माल का निर्यातक हो गया है ... इन परिस्थितियों में इसके कृषीय उत्पादक को संरक्षण प्रदान करने का हर संभव प्रयत्न करना चाहिए"।

हालाँकि भारत में स्थापित साम्राज्यवादी शासन का कुप्रभाव सभी परंपरागत भारतीय उद्योगों पर पड़ा पर यह प्रभाव सभी उद्योगों पर एक सा नहीं था। जिस समय कृषि कार्य स्थगित रहता था और किसान खाली बैठे होते थे, उस समय का उपयोग वे टोकरी बनाने या नारियल की छाल से सामान बनाने के लिए करते थे। कच्चे माल उन्हें स्थानीय तौर पर सस्ते दामों में उपलब्ध हो जाते थे। यह उद्योग मशीन से बने विदेशी मालों से प्रभावित नहीं हुआ। कुम्हार, लोहार और बढ़ई का उद्योग विदेशी वस्तुओं के आयात से प्रभावित हुआ पर बहुत कम।

देश से खाल के निर्यात के कारण चमड़े के काम से जुड़े कारीगर प्रभावित हुए। इसी प्रकार विदेशी सामान के बाजार पर छा जाने के कारण ग्रामीण हस्तशिल्प प्रभावित हुआ। परंपरागत शहरी विकास की वस्तुओं के उद्योग पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि उनका खरीददार राजन्य वर्ग अब विदेशी वस्तुओं को तरजीह देने लगा।

इस प्रकार अनौद्योगीकरण का प्रभाव अलग-अलग पड़ा। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :

क) कुछ स्थानीय और देशी उत्पादों का विकल्प विदेशी वस्तुएँ पैदा न कर सकीं।

ख) ग्रामीण इलाकों में बहुत से स्थानों पर एकीकृत बाजार न होने के कारण वस्तुएँ गाँवों तक पहुँच न सकीं, और

ग) अन्य कोई रोजगार का साधन उपलब्ध न होने के कारण अनार्थिक होने के बावजूद कुछ शिल्प जबरन अस्तित्व में रहे।

बोध प्रश्न 2

1) अनौद्योगीकरण संबंधी राष्ट्रवादी अर्थशास्त्रियों के विचारों पर 100 शब्दों में टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीतियों से विभिन्न उद्योगों पर अलग-अलग प्रभाव क्यों पड़ा? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

17.6 सारांश

इस प्रकार सरकारी और निजी गुणात्मक सर्वेक्षण, व्यापार आँकड़े, रोजगार आँकड़े (हालाँकि यह बहुत प्रमाणिक नहीं है) और भारत में उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था के आयामों और सीमाओं के आधार पर हम बे-हिचक कह सकते हैं कि भारत में ब्रिटिश शासन की प्रथम शताब्दी में मशीन से बने सामानों और तकनीकी दृष्टि से उच्च कोटि की वस्तुओं के आयात के कारण भारतीय औद्योगिक क्षेत्र का पतन हुआ।

17.7 शब्दावली

उत्पादकता : पूँजी और श्रम को देखते हुए एक उद्योग या कृषि क्षेत्र के उत्पादन का स्तर।

कुल उत्पादन : उद्योग का कुल उत्पादन।

पूँजी निवेश : उद्योग के विकास के लिए हुई उत्पादन प्रक्रिया में लगाया गया धन, अंतर संरचना, मशीन आदि।

प्रति व्यक्ति आय : देश के प्रत्येक व्यक्ति की औसतन आय।

बुलियन : यहाँ सोने के अर्थ में प्रयुक्त।

राष्ट्रीय आय : एक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक गतिविधियों से उत्पन्न आय।

वास्तविक आय : मूल्य के संदर्भ में वास्तविक आय।

व्यापार में वस्तुओं का हिस्सा : आयात और निर्यात में शामिल वस्तुओं का अनुपात।

व्यापारवादी : व्यापार के संबंद्ध नीतियाँ और गतिविधियाँ।

सकारात्मक व्यापार संतुलन : एक ऐसी स्थिति जिसमें निर्यात आयात से ज्यादा हो।

17.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) घ   2) क   3) घ

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 17.4,

2) देखिए भाग 17.4 और 17.5